मानव जीवन विकास समिति

मासिक पत्रिका

(मार्च 2024)

प्राकृतिक व जैविक खेती को मिल रहा बढ़ावा

मानव जीवन विकास समिति द्वारा कार्यक्षेत्र दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा व जबेरा ब्लॉक तथा कटनी जिले के बड़वारा व ढ़ीमरखेड़ा ब्लॉक की 60 पंचायत के 155 गांव मे 7750 किसानों के साथ गेहूं व सब्जी की खेती जैविक तरीके से कराया गया है। जैविक खेती कर रहे किसानों को कृषि व उद्यानिकी विभाग से जोड़कर सरकारी योजना के तहत गेहूं, सरसो और सब्जी का बीज 422 किसानों को दिलाया गया है जिससे किसान राहत भरी सांस का अनुभव कर रहे है।

सालों साल प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों की संख्या मे इजाफा होता जा रहा है। एक किसान अपने आसपास के लगभग 10 किसानों को प्रभावित करता है जिससे पता चलता है कि प्राकृतिक खेती फायदेमंद है स्वास्थ के लिए लाभकारी भी है।

रवि सीजन, खरीफ सीजन और जायद सीजन की अलग अलग फसले किसान प्राकृतिक खेती के तौर पर कर रहे है। पूर्व मे हमने खरीफ सीजन की फसल देखा है अच्छा उत्पादन रहा है और अभी रवि सीजन की फसल मे भी अच्छा उत्पादन देखने को मिल रहा है।

प्राकृतिक व जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों के साथ मिलकर जैविक खाद व दवाईयां बनायी गई। जिसमे मुख्यतः कम्पोस्ट खाद, वर्मी कम्पोस्ट खाद और अग्निअस्त्र, मठास्त्र, नीमास्त्र, दसपर्णी, जीवामृत, घन जीवामृत, ब्रम्हास्त्र आदि प्रकार की दवाईयां किसान तैयार कर अपने खेत मे उपयोग कर रहा है।

रासायनिक खेती कर रहे किसानों की तुलना मे गैर कीटनासी प्रबंधन आधारित खेती से किसानों को 20 से 30 प्रतिशत अधिक लाभ मिल रहा है।

किसी भी प्रकार की फसलो की बीमारी के रोकथाम के लिए रासायनिक खाद और बीज की दुकान का चक्कर अब नही काटना पड़ता। किसान स्वयं अपने घरो मे ही जैविक खाद और जैविक कीटनाशक दवाईया तैयार कर खेती मे उपयोग कर लेते है। इससे यह साफ पता चलता है कि किसानों की कही न कही दुकानो पर निर्भरता कम हो रही है।

प्राकृतिक व जैविक खेती करने से किसानों का मानना है कि शुद्ध अनाज व सब्जियों का उत्पादन होने से स्वास्थ्य पर भी प्रभाव देखने को मिला है। रासायनिक युक्त उत्पादित अनाज व सब्जियों के उपयोग से आये दिन लोगों का स्वास्थ्य बिगड़ता नजर आता था जिससे आकड़ा लगाया गया कि प्रति व्यक्ति सालाना आय मे से 25 से 30 प्रतिशत पैसा डाक्टरों के पास चला जाता था अस्वस्थ होने से कही मजदूरी भी नही कर पाते थे। अच्छा स्वास्थ रखने के लिए हम सभी को प्राकतिक व जैविक खेती को अपनाना होगा।

किचन गार्डन

मानव जीवन विकास समिति द्वारा कार्यक्षेत्र के किसानों को किचन गार्डन तैयार करने आगे बढ़ाया जा रहा है। ऐसे लगभग 500 किसान किचन गार्डन तैयार कर 10 प्रकार के सब्जी का उत्पादन कर रहे है। आशा है कि प्रत्येक किसान को अपने किचन गार्डन से सप्ताह मे 500 से 1000 रूपये तक की बचत हो रही है। साथ ही बिना रासायनिक खाद और रासायनिक दवाईयों के अच्छी गुणवत्ता वाली सब्जी भी आसानी से उपलब्ध हो जाती है। जैविक सब्जी के प्रयोग से मनुष्य पर होने वाली बीमारियों पर भी कमी आई है।

हरी सब्जियों मे देखा जाये तो पालक, मेथी, लाल भाजी, गोभी, टमाटर, मिर्ची, प्याज, धनिया, मूली, गाजर, आलू सभी प्रकार की सब्जियों का उत्पादन किया जा रहा है।

आलू, टमाटर, मिर्ची, गोभी और प्याज की फसल ज्यादा मात्रा मे 100 किसान करने को तैयार हुये है। इससे यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि किचिन गार्डन के अलावा जब किसान बल्क मे सब्जी का उत्पादन करेगा तो अच्छी आमदनी भी कमा सकता है। इसके लिए विचार किया जा रहा है कि जैविक सब्जी का बाजार भी अलग से लगाया जाये ताकि किसान जैविक सब्जी का अच्छा मूल्य प्राप्त कर सके। कई जगह जैविक व आर्गनिक सब्जियों के बाजार उपलब्ध भी हो गये है जहां से लोगों को आसानी से प्राप्त हो जाता है।

प्रदर्शनी के माध्यम से इसका प्रचार प्रसार जिले, प्रदेश और प्रदेश के बाहर भी किया जा रहा है।

कटनी जिले के बड़वारा ब्लॉक मे 254 किचिन गार्डन, ढ़ीमरखेड़ा ब्लॉक मे 150 किचिन गार्डन तैयार कराये गये।

दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा ब्लॉक मे 100 किचिन गार्डन, जबेरा ब्लॉक मे 100 किचिन गार्डन तैयार कराये गये है।

किचिन गार्डन लगाने से तात्पर्य है किसानों को अपने घर पर शुद्ध व जैविक सब्जियां मिलेगी जिसका असर सीधा स्वास्थ पर पड़ेगा सभी स्वस्थ और निरोगी होंगे। अपने घर पर सब्जियां लगी होने से जब कभी जरूरत होती है उसी समय ताजी सब्जी तोड़कर बनाते है जिससे ज्यादा पोषक तत्व मिलता है। स्वस्थ रहने के लिए पोषक तत्व की महती आवश्यकता है, इसकी कमी को पूरा करने के लिए किचिन गार्डन कारगर सिद्ध हुआ है। किचिन गार्डन मे तरह तरह के सब्जियां उत्पादित कर पोषण युक्त भोजन कर रहे है।

गैर कीटनाशी प्रबंधन

मानव जीवन विकास समिति द्वारा खेती मे लागत कम करने के परिपेक्ष्य मे बहुत सारे तरीके किसानों को अपनाने बताये जा रहे है। गैर कीटनाशी प्रबंधन प्रणाली किसानो के लिए बरदान साबित हो रहा है। इस प्रणाली से किसान फसल पर आसानी से कीट नियंत्रण पा लेता है। साथ ही साथ किसान पशुपालन को भी प्राथमिकता मिल रहा है। पशुपालन से किसान को घर पर ही गौमूत्र, गोबर उपलब्ध हो जाता है जिससे गैर कीटनाशी दवाईया व खाद बनाने मे मदद मिलती है। जैसा की आप देख ही हरे है कि गौमूत्र, दसपर्णी, घनजीवामृत, अग्निअस्त्र, जीवामृत, लमित, नीमास्त्र और पंचगब्य आदि किसान तैयार कर खेत मे उपयोग कर रहे है। जैविक दवाईया बनाने मे कटनी और दमोह जिले के 145 किसान और समह सदस्य लगे है।

दसपर्णी : प्राकृतिक सामग्री का उपयोग करके तैयार किया गया दसपर्णी अर्क सभी प्रकार के कीड़ों और बीमारियों को नियंत्रित करने मे बहुत प्रभावी है। यह पौधे की समग्र प्रतिरक्षा को मजबूत करता है, यह जीवाणु प्रतिरोधक और फफूंदरोधक है। किसान इसे घर पर तैयार कर सकते है।

जीवामृत : जीवामृत खाद मिट्टी मे सूक्ष्म जीवो की वृद्धि करने मे सहायक होते है। इस तरल खाद मे अधिक मात्रा मे सूक्ष्म जीव होते है जो मिट्टी मे भी गुणात्मक वृद्धि से मिट्टी को सजीव बनाते है और यही सूक्ष्म जीव पौधों को पोषक तत्व उपलब्ध कराने मे सहायक होते है।

नीमास्त्र : नीमास्त्र भी रस चूसक कीड़ों को व तना छेदक कीटों को नियंत्रित करता है जो मुख्यतः नीम की पत्ती से तैयार किया जाता है।

पंचगब्य : पंचगब्य बहुत ही प्रभावकारी तरल खाद है हमारे ग्रन्थों में भी इसका उल्लेख किया गया है। पंच गब्य का अर्थ है पंच गब्य (गाय से प्राप्त पॉच पदार्थो का घोल) अर्थात् गौमूत्र, गोबर, दूध, दही और घी के मिश्रण से बनाए जाने वाले पदार्थ को पंचगब्य कहते हैं। खेती मे उत्पादन क्षमता को बढाने के साथ साथ यह फसल में रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि करता है।

घन जीवामृत : यह बहुत ही उपयोगी खाद है। इसे किसान डी.ए.पी. के स्थान पर उपयोग कर रहे हैं, इसे खेत में डालते समय मिट्टी में पर्याप्त नमी होना आवश्यक है।

अग्निअस्त्र : यह तना छेदक व रस चूसक दोनों ही प्रकार के कीटो को नियंत्रित करने के लिए उपयोग में लाया जाता हैं यह अत्यंत तीव्र असरकारक होता हैं किसान इसका भी उपयोग कर रहे है।

लमित : रस चूसक कीट से नियंत्रण पाने के लिए किसानो द्वारा लमित तैयार कर फसलो मे डाला जा रहा है।

गैर कीटनाशी प्रबंधन का मुख्य उद्धेश्य खेती मे कीटों और रोगों के प्रबंधन के लिए विभिन्न तकनीकों का अनुशरण करना है।

जैविक कीटनाशी का उपयोग : जैविक कीटनाशक खेती मे कीटो और रोगों को नियंत्रित करने मे मदद करता है। इनमे नीम के बीज, नीम के पत्ते, नीम के तेल, नीम के खाद्य आदि शामिल है।

पौधों को स्वस्थ बनाये रखने के लिए महत्वपूर्ण तरीके अपनाये :

पर्याप्त मात्रा मे रोशनी, नियमित पानी, अच्छी मिट्टी और खाद को अपनाये।

जैव उत्पाद इकाई केन्द्र (बी.आर.सी.)

जैव उत्पाद इकाई केंद्र : मानव जीवन विकास समिति द्वारा कटनी जिले के बड़वारा और ढ़ीमरखेड़ा ब्लाक के 80 गांव मे 8000 किसानों के साथ आजीविका आधारित परियोजना का संचालन किया जा रहा है। इसी परिपेक्ष्य मे किसानों की सुविधा को ध्यान मे रखते हुये जैव उत्पाद इकाई केंद्र की स्थापना कर किसानों को आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने की पहल की जा रही है।

बड़वारा ब्लाक के 4 गांव महगवां, भजिया, भादावर और पठरा मे जैव उत्पाद इकाई केंद्र की स्थापना की गई है।

ढ़ीमरखेड़ा ब्लाक के 5 गांव खंदवारा, दैगवा, सलैया, पिपरिया चांद, और जामुनचुआ मे जैव उत्पाद इकाई केंद्र की स्थापना की गई है।

जैव उत्पाद इकाई केंद्र का संचालन गांव की स्व.सहायता समूह की महिलाओं द्वारा किया जाना तय किया गया है। गांव गांव मे संचालित समूह की महिलाओं द्वारा प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने जैविक दवाईयां और जैविक खाद का निर्माण कर स्थापित केन्द्र के माध्यम से उचित मूल्य पर किसानों को उपलब्ध कराया जायेगा। इस पूरी प्रक्रिया से समूह व किसान दोनो की आर्थिक स्थिति मे बदलाव आयेगा। जैव उत्पाद इकाई केंद्र मे जैव कीटनासी दवाईया, फूलवर्द्धक दवाईया समूह के माध्यम से तैयार कर केन्द्र के माध्यम से किसानों को उपलब्ध कराया जायेगा।

जैव उत्पाद जैसे गौमूत्र, दसपर्णी, घनजीवामृत, अग्निअस्त्र, जीवामृत, लमित, नीमास्त्र और पंचगब्य आदि उत्पाद तैयार कर केन्द्र मे रखा जायेगा और इसे तैयार करने वाले समूह व किसान को उचित पारिश्रमिक दिलाया जायेगा। समूह सदस्यों ने जैव उत्पाद तैयार करने प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया है और अपने अपने घरों मे या सामूहिक रूप से जैव उत्पाद तैयार कर रहे है। इन सभी उत्पादों को एफ.पी.ओ. एलाईव ब्रांडिंग की मदद से बाजार पर उतारा जा रहा है।

जैव उत्पाद इकाई केन्द्र की पहचान अपने गांव से लेकर जिले व प्रदेश मे भी बन रही है। इस प्रकार के केन्द्र गांव और जिले के लिए पहली बार चलाये गये है जिससे प्रशासन का भी सहयोग मिलता है जहां कही भी जैव उत्पाद की प्रदर्शनी लगानी होती है प्रशासन की तरफ से जरूर जानकारी मिलती है और समूह के द्वारा अपने जैव उत्पाद की प्रदर्शनी लगाई जाती है। प्रदर्शनी मे स्व–सहायता समूह की महिलाओं द्वारा ही प्रदर्शनी लगाई जाती है और सभी हिसाब किताब भी समूह द्वारा ही रखे जाते है।

बीज बैंक

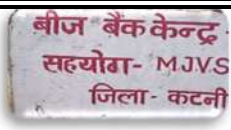

बीज बैंक केन्द्र की स्थापना : समिति अन्तर्गत परियोजना क्षेत्र के कटनी और दमोह जिले के 57 ग्राम पंचायत के 155 गांव मे 15500 किसानों को सीधा लाभ पहुंचेगा। किसानों का मानना है कि हमे दुकानों से बीज ज्यादा मूल्यों मे लेना पड़ता है और सीजन मे किसान के पास पैसा भी बड़ी मुश्किल मे मिल पाता है जिसके कारण कई किसान पैसा के अभाव मे खेती नही करते बल्कि मजदूरी पर आश्रित हो जाते है। ऐसी समस्याओं से निजात पाने के लिए समिति के प्रयास से बीज बैंक खोले गये है, जहां पर किसानों को आसानी से बीज उपलब्ध हो जायेगा और किसान आसानी से खेती कर पायेंगे।

बीज बैंक का संचालन स्व–सहायता समूह सदस्य महिलाओं एवं ग्राम विकास समिति सदस्यों के द्वारा किया जा रहा है। बीज बैंक खुलने से महिलाओं को रोजगार मिलेगा।

बीज बैंक मे धान, गेहूं, कोदो, कुटकी, रागी, ज्वार, बाजरा, मक्का, मसूर, मूंग, मटर, चना, सरसो और सब्जियों के बीज को भी संगृहीत कर रखा गया है। बीज बैंक मे विलुप्त हो रही प्रजातियों को इकट्ठा कर रखा जायेगा।

तेन्दुखेड़ा ब्लॉक मे 20 ग्राम पंचायत के 50 गांव मे 5000 किसानों के साथ आजीविका आधारित परियोजना का संचालन किया जा रहा है। किसानों की जरूरत के आधार पर तेन्दुखेड़ा ब्लॉक के 5 गांव समदई, धनगौर, सेहरी, धनेटामाल, हर्रई मे बीज बैंक की स्थापना की गई है।

जबेरा ब्लॉक मे 7 ग्राम पंचायत के 25 गांव मे 2500 किसानों के साथ आजीविका आधारित परियोजना का संचालन किया जा रहा है। किसानों की जरूरत के आधार बीज बैंक जबेरा ब्लॉक के 5 गांव चौरई, पिपरिया, डेलनखेड़ा, भिनैनी, पटी सिंगोरगढ़ मे बीज बैंक की स्थापना की गई है।

बड़वारा ब्लॉक मे 21 ग्राम पंचायत के 50 गांव मे 5000 किसानों के साथ आजीविका आधारित परियोजना का संचालन किया जा रहा है। किसानों की जरूरत के आधार पर बड़वारा ब्लॉक के 7 गांव भदौरा नं.1, बनहरा, बरगवां नं.2, गोपालपुर, बिलायतखुर्द, नन्हवारा सेझा, बरगवां नं.1 मे बीज बैंक की स्थापना की गई है।

ढ़ीमरखेड़ा ब्लॉक मे 9 ग्राम पंचायत के 30 गांव मे 3000 किसानों के साथ आजीविका आधारित परियोजना का संचालन किया जा रहा है। किसानों की जरूरत के आधार पर ढ़ीमरखेड़ा ब्लॉक के 10 गांव खंदवारा, दैगवा, भलवारा, सलैया, बांध, दादरसिहुडी, सरई, कुदरा, सर्रा, पहरूआ मे बीज बैंक की स्थापना की गई है।

जैविक खाद प्रबंधन

भूनाडेप खाद

भू–नाडेप आसानी से तैयार किया जाता है इसे समतल भूमि पर छायादार स्थान मे 5 फिट चौड़ाई में व 10 से 12 फिट लम्बाई में भूमि को समतल किया जाता है इसे गोबर से लीप लिया जाता है फिर 6 इंच गोबर कचरे की परत बिछाई जाती है, इसे पानी से अच्छी तरह से गीला किया जाता है, फिर आधा से एक इंच मिटटी की परत डालते हैं इसे भी पानी से गीला करते हैं इसी तरह परत दर परत 4 फिट ऊँचाई तक तैयार करते हैं। अंत में चारों तरफ से व ऊपर से गीली मिट्टी लपेटकर बंद कर देते हैं। तीन माह में यह पच कर तैयार हो जाता है आवश्यकतानुसार इसमें जैविक कल्चर मिलाए जाने चाहिए।

भू नाडेप (कटनी जिले के बड़वारा ब्लॉक मे 68 और ढ़ीमरखेड़ा ब्लॉक मे 46 भूनाडेप बनवाये गये है।

भूनाडेप खाद : यह एक प्रकार का जैविक खाद है जो खेती के काम आती है।

पौधों के विकास मे सहायक : भूनाडेप खाद मे नामकरणतत्वों की अच्छी मात्रा होती है जो पौधों के विकास लिए आवश्यक है।

मिट्टी की गुणवत्ता मे सुधार : यह मिट्टी को उपर्युक्त गुणवत्ता प्रदान करती है जिससे पौधों का अच्छा विकास होता है।

पौधों की संरक्षा : यह पौधों को बीमारियों और कीटों से बचाने मे मदद करती है।

जल संचयन की क्षमता : भूनाडेप खाद जल संचयन की क्षमता बढ़ाती है जो सूखे के समय मे पौधों के लिए महत्वपूर्ण होताहै।

Nadep Compost) जैविक खेती के लिए एक उपयोगी खाद है। यह खाद नाडेप टांकों में तैयार की जाती है और खेती में उपयोग की जाती है। नाडेप कम्पोस्ट के कुछ महत्वपूर्ण फायदे हैं:

1. **उच्च गुणवत्ता**: नाडेप कम्पोस्ट बहुत उच्च गुणवत्ता की होती है। इसमें नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश, और अन्य सूक्ष्म तत्व पाए जाते हैं[1]।
2. **पर्यावरण के लिए उपयोगी**: नाडेप कम्पोस्ट अपने खेत से आने वाले पुआल घास, खरपतवार पत्तियां, घर का झाड़न, और पशुओं के गोबर का उपयोग करके तैयार की जाती है[2]।
3. **जैविक खेती के लिए उपयोगी**: नाडेप कम्पोस्ट जैविक खेती में उपयोगी होती है और पौधों के स्वास्थ्य को बढ़ावा देती है।
4. **सामुदायिक उत्पादन**: नाडेप कम्पोस्ट को सामुदायिक रूप से तैयार किया जा सकता है, जो गांव के लोगों के लिए आर्थिक और पर्यावरणीय रूप से उपयोगी होता है।

जैविक खेती को बढ़ाना है तो देशी खाद बहुत ही जरूरी है जिसमे भू–नाडेप खाद भी एक भाग है। कृषि की दृष्टि से भूमि की उपजाऊ क्षमता मे वृद्धि हो जाती है। रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होती है। फसलों की उत्पादकता मे वृद्धि होती है। मिट्टी की दृष्टि से जैविक खाद के उपयोग से भूमि की गुणवत्ता मे सुधार होता है। भूमि की जल धारण क्षमता बढ़ती हैं भूमि से वाष्पीकरण कम होता है। पर्यावरण की दृष्टि से भूमि के जल स्तर मे वृद्धि होती है। मिट्टी खाद्य पदार्थ और जमीन मे पानी के माध्यम से होने वाले प्रदूषण मे कमी आती है। कचरे का उपयोग खाद बनाने मे उपयोग होता है। फसल उत्पादन लागत मे कमी एवं आय मे वृद्धि होती है।

वर्मीकम्पोस्ट खाद

मानव जीवन विकास समिति द्वारा कटनी और दमोह जिले के 57 ग्राम पंचायत के 155 गांव मे 15500 किसानों के साथ आजीविका आधारित परियोजना का संचालन समिति अपने कार्यकर्ता साथियों के सहयोग कर रही है। समिति का मानना है कि किसानों की स्थायी आजीविका सुनिश्चित हो इसके लिए सर्वेक्षण के आंकडे अनुसार किसानों के साथ अलग अलग गतिविधियां आयोजित की जा रही है। भूमिधारी किसानों के साथ भूमि के डवलपमेंट के साथ प्राकृतिक व जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। भूमिहीन किसानो के साथ पशुपालन और स्व–रोजगार के माध्यम से व्यवसाय स्थापित कराकर उनकी आजीविका सुनिश्चित करने प्रयास किया जा रहा है।

दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा और जबेरा ब्लॉक मे 2 वर्मीवेड लगवाये गये है।

कटनी जिले के बड़वारा ब्लॉक मे 8 वर्मीवेड लगवाये गये है।

वर्मीकम्पोस्ट केंचुओं की मदद से कचरे को खाद में परिवर्तित करने हेतु केंचुओं को नियंत्रित वातावरण में पाला जाता है। इस क्रिया को वर्मीकल्चर कहते हैं केंचुओं द्वारा कचरा खाकर जो कास्ट निकलती है उसे एकत्रित रूप से वर्मी कम्पोस्ट कहते हैं।

वर्मीकम्पोस्ट खाद तैयार करने के लिए किसानों को जागरूक किया जा रहा है। कृषि और उद्यानिकी विभाग के सम्पर्क कर सरकारी योजना का लाभ दिलाने किसानों को विभाग से लिंक कराने समिति लगातार प्रयासरत है। विभाग के माध्यम से किसानों को वर्मीवेड और वर्मीवर्म दिया जाता है जिसमे भी समिति मदद करती है।

यह की वर्मीवेड और वर्मीवर्म जब बाजार से खरीदकर किसानों के यहां डिमांस्ट्रेशन लगाने के लिए मानव जीवन विकास समिति का योगदान रहता है। एक वर्मीवेड की कीमत लगभग 1800 रूपये पड़ता है जिसमे किसान का योगदान लगभग 25 प्रतिशत 450 रूपये लेकर 70 प्रतिशत 1350 रूपये समिति का योगदान देकर चिन्हित किसानों के यहां वर्मीवेड लगवाकर प्रत्येक किसान को 2 किलोग्राम केचुआ लगभग 800 रूपये का समिति सहयोग करती है।

वर्मी कम्पोस्ट के लाभ :

- **वर्मी कम्पोस्ट एक अच्छी किस्म की खाद है तथा साधारण कम्पोस्ट या गोबर की खाद से ज्यादा लाभदायक साबित हुई है। इसके प्रयोग करने में निम्नलिखित लाभ है–**
- **केंचुओं युक्त जमीन में भूमि का क्षरण रुकता है। केंचुओं के कारण वातावरण स्वस्थ रहता है।**
- **खेती लाभकारी तथा निरंतर बनी रहती है। फसलों के दानों में चमक एवं सुगंध बढ़ाता है।**
- **वर्मी कम्पोष्ट भूमि से रसायनिक उर्वरकों के विषैले प्रभाव को कम करता है।**
- **वर्मी कम्पोष्ट भूमि के कार्बनिक पदार्थों की मात्रा को बढ़ाता है।**
- **वर्मी कम्पोष्ट के प्रयोग से लाभदायक जीवाणु की संख्या बढ़ती है।**

बैठक, प्रशिक्षण एवं कार्यशाला

प्राकृतिक खेती किसान पाठशाला एवं सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम-

प्राकृतिक खेती किसान पाठशाला एवं सह प्रशिक्षण कार्यक्रम : प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने किसानों को प्रशिक्षित करने प्रशिक्षण का आयोजन किया जा रहा है। प्राचीन काल में, मानव स्वास्थ्य के अनुकुल तथा प्राकृतिक वातावरण के अनुरूप खेती की जाती थी, जिससे जैविक और अजैविक पदार्थों के बीच आदान-प्रदान का चक्र निरन्तर चलता रहा था, जिसके फलस्वरूप जल, भूमि, वायु तथा वातावरण प्रदूषित नहीं होता था। भारत वर्ष में प्राचीन काल से कृषि के साथ-साथ गौ पालन किया जाता था, जो कि प्राणी मात्र व वातावरण के लिए अत्यन्त उपयोगी था। परन्तु बदलते परिवेश में धीरे-धीरे कम हो गया तथा कृषि में तरह-तरह की रसायनिक खादों व कीटनाशकों का प्रयोग हो रहा है जिसके फलस्वरूप जैविक और अजैविक पदार्थों के चक्र का संतुलन बिगड़ता जा रहा है, और वातावरण प्रदूषित होकर, मानव जाति के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है। अब हम रसायनिक खाद, जहरीले कीटनाशकों के उपयोग के स्थान पर, जैविक खादों एवं दवाईयों का उपयोग कर, अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं जिससे भूमि, जल एवं वातावरण शुद्ध रहेगा और मनुष्य एवं प्रत्येक जीवधारी स्वस्थ रहेंगे।

जैविक खेती का महत्त्व

- भूमि की उर्वरा शक्ति में वृद्धि एवं टिकाऊपन।
- जैविक खेती - प्रदुषण रहित खेती।
- कम पानी की आवश्यकता।
- पशुओं का अधिक महत्व।
- फसल अवशेषों को खपाने की समस्या नहीं।
- अच्छी गुणवत्ता की पैदावार।
- कृषि मित्रजीव की सुरक्षा एवं उनकी संख्या में बढोतरी।
- स्वास्थ में सुधार।
- कम लागत।
- अधिक लाभ।

टिकाऊ कृषि के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाया गया, जिसमें परिवार सक्रिय रूप से प्राकृतिक खेती और एनपीएम-आधारित कृषि पद्धतियों में लगे हुए हैं। इनमें से किसानों ने एक समूह सर्टिफिकेट प्रक्रिया में भाग लिया, जिसका उद्देश्य प्राकृतिक खेती मानकों और एनपीएम मानकों के पालन को मान्य करना।

प्राकृतिक खेती की आवश्यकता :

हम पिछले कई वर्षों से रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग फसलों पर करते आ रहे है। जिससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति खत्म हो चुकी है एवं भूमि के प्राकृतिक स्वरूप में भी बदलाव हो रहे है जो किसानो के लिए काफी नुकसानदायक है। रासायनिक कीटनाशकों के प्रयोग से जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, मृदा प्रदूषण प्रतिदिन बढ़ रहा है। किसानों की फसल पैदावार कमाई का आधा हिस्सा रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक खरीदने में चला जाता है। क्योकि रासायनिक कीटनाशन काफी महंगे होते है।

ग्राम नेताओं का प्रशिक्षण

दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा ब्लॉक की 18 ग्राम पंचायतों और जबेरा ब्लॉक की 7 ग्राम पंचायतों मे ग्राम नेताओं के साथ प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

प्रशिक्षण सत्रों के माध्यम से तेन्दुखेड़ा ब्लाक की कुल 379 पुरूष और 90 महिला एवं जबेरा से 156 पुरूष और 65 महिलाएं प्रशिक्षित हुये।

कटनी जिले के बड़वारा ब्लॉक की 16 ग्राम पंचायतों मे ग्राम नेतओं का प्रशिक्षण किया गया जिसमे कुल 416 प्रतिभागी प्रशिक्षित हुये।

ग्राम नेताओं का प्रशिक्षण की आवश्यकता इसलिए पड़ी ताकि गांव के जागरूक नेताओं की मदद से गांव का विकास हो सके। ग्रामसभा के माध्यम से ग्राम विकास योजना बनाई जाती है इसे जीपीडीपी मे शामिल कर ग्रामसभा के माध्यम से अनुमोदित कराकर गांव मे पंचायत के द्वारा काम कराया जाता है। पंचायत स्तर पर पांच वर्षीय जीपीडीपी बनाकर उसे प्रत्येक वर्ष के हिसाब से अलग अलग वर्ष मे क्या काम कराया जाना है यह सभी दर्शाया जाता है यह बात स्पष्ट है कि जीपीडीपी के बारे मे कुछ ही लोगों को पता है और इस पर बहुत ही कम एक्शन लिया जाता है क्योंकि सभी को जानकारी ही नही होती है। इसीलिए तय किया गया की गांव के लोगों को जागरूक किया जाये ताकि ग्राम विकास योजना मे आवाज उठा सके।

ग्राम नेताओं मे जनप्रतिनिधि, ग्राम विकास समिति सदस्य, स्व–सहायता समूह सदस्य एवं गांव के जागरूक नेताओं को शामिल किया गया है। ये सभी नेता प्रशिक्षित होकर ग्राम विकास मे सहयोग करेंगे। ग्राम नेता प्रशिक्षण मे तय किया गया कि भूमिधारी किसान को भूमि डवलपमेंट की स्क्रीम से जोड़ा जाये और जैविक खेती की ओर मोड़ा जाये। दूसरा यह कि भूमिहीन किसानों के साथ सरकार की अन्य जन कल्याणकारी योजनाओं से जोड़ा जाये जैसे मनरेगा योजना, पशुपालन विभाग से बकरी पालन, मुर्गी पालन एवं मत्स्य विभाग से मछली पालन को बढ़ावा दिया जाये। सरकार की स्व'रोजगारोन्मुखी योजना से जोड़कर स्वयं का व्यवसाय स्थापित कराकर आत्मनिर्भर बनाना।

किसान कार्यशाला एवं बीज मेला का आयोजन

एमजेवीएस द्वारा दमोह जिले के तेंदूखेड़ा ब्लॉक के समदई गांव में किसान कार्यशाला एवं बीज मेला कार्यक्रम का आयोजन किया गया. बीज मेले में लगभग 50 गांवों ने भाग लिया, आरआरए नेटवर्क के प्रतिनिधि और संगठन टीम भी मौजूद थी। इस कार्यक्रम का उद्देश्य पारंपरिक बीजों को लुप्त होने से बचाना और उनकी उपलब्धता बढ़ाने के लिए उन्हें खेती में फिर से शामिल करना था। किसान विभिन्न प्रकार के बीजों का जश्न मनाने और उन्हें अच्छी तरह से उगाने का जश्न मनाने के लिए एक साथ आए। प्रदर्शन पर बीजों के बहुत सारे स्टॉल थे, और किसान उत्साहपूर्वक बात कर रहे थे कि उन्हें कौन सा बीज सबसे अधिक पसंद है। उन्होंने खेती के बारे में कहानियाँ और सुझाव भी साझा किए। वहां विशेषज्ञ भी थे जो पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना फसलें उगाने के बारे में नई चीजें सिखा रहे थे.

बीज मे धान, गेहूं, कोदो, कुटकी, रागी, ज्वार, बाजरा, मक्का, मसूर, मूंग, मटर, चना, सरसो, अलसी, अरहर, उड़द, सोसाबीन, तिली, राई और सब्जियों के बीज मे अदरक, हल्दी, लहसुन, मिर्ची, धनिया, बैगन, गोभी, मूली, गाजर, प्याज, टमाटर, लौकी, सेमी, बरबटी, भिण्डी, कद्दू, तुरई, पालक, मेथी, लाल भाजी आदि विभिन्न प्रकार के बीज बीजोत्सव मेला कार्यक्रम मे रखा गया है।

कार्यक्रम का मुख्य उद्धेश्य यह था कि इन सभी रवि, खरीफ और जायद की फसलों के बीज को देशी तरीके से सुरक्षित बचाकर संरक्षित कर रखना है और बीज शोधन के माध्यम से बीजोपचार कर उपयोग करना है। हाईब्रिड बीज का उपयोग बिल्कुल नही करें, हाईब्रिड बीज खरीदने से लागत बढ़ती है। देशी बीज के उपयोग से लागत मे कमी आती है और उत्पादकता मे बढ़ोत्तरी होती है।

किसानों का मानना है कि आज के बढ़ते रासायनिक खाद बीज के दौर ने किसानों को तबाह कर दिया है। भूमि की उर्वरक क्षमता दिनो दिन घटती चली जा रही है और किसान बाजार पर निर्भर होते जा रहा है। रासायनिक खाद बीज के उपयोग से भूमि के साथ साथ मानव स्वास्थ पर भी दुष्प्रभाव बढ़ता जा रहा है। दुष्परिणामों को खत्म करने के लिए जैविक व प्राकृतिक खेती पद्धति को अपनाना होगा। बीज मेला कार्यक्रम मे उपस्थित प्रतिभागियो का मानना है कि जैविक व प्राकृतिक खेती करना आज की जरूरत ही नही आवश्यकता भी है इसे बढ़ाना होगा। कार्यक्रम के दौरान विशेषज्ञो द्वारा खेती करने के नये नये तरीके बताये गये।

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय में
एक दिवसीय किसान एक्सपोज़र विजिट का आयोजन

प्राकृतिक खेती और आधुनिक कृषि तकनीकों को बढ़ावा देने के लिए जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय में एक दिवसीय किसान एक्सपोज़र विजिट का आयोजन किया गया।

 # इस प्रदर्शन में तेंदूखेड़ा और जबेरा ब्लॉक के 46 किसान शामिल थे। आधुनिक कृषि तकनीकों और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए जेएनकेवीवी, जबलपुर में किसानों की एक्सपोज़र यात्रा, प्राकृतिक खेती तकनीकों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण साबित हुई। इस यात्रा ने ज्ञान हस्तांतरण और कौशल विकास को सुविधाजनक बनाया, जिससे किसानों को टिकाऊपन पद्धति अपनाने के लिए सशक्त बनाया गया । यात्रा के दौरान हासिल की गई नई जागरूकता और कौशल से इसे उत्प्रेरित करने की उम्मीद है। प्राकृतिक खेती और मिलेट खेती को अपनाना, जिससे कृषि लचीलेपन में वृद्धि हुई और क्षेत्र में आजीविका में सुधार. भ्रमण में तेंदूखेड़ा और जबेरा ब्लॉक के 46 किसान शामिल थे।

महत्वपूर्ण बिंदु :

- किसानों को विभिन्न प्राकृतिक कृषि तकनीकों जैसे जैविक खाद, मल्चिंग आदि से परिचित कराया गया ।
- व्यावहारिक प्रदर्शनों ने मिट्टी के स्वास्थ्य और कीटों को बढ़ाने के लिए इन तकनीकों के अनुप्रयोग को प्रदर्शित किया।
- जेएनकेवीवी विशेषज्ञों ने मिलेट की खेती पर कार्यशालाएं आयोजित कीं जिसमें इसके पोषण मूल्य पर जोर दिया गया।
- किसानों को उपयुक्त मिलेट किस्मों, इष्टतम खेती प्रथाओं और फसल के बाद की देखभाल के बारे में शिक्षित किया गया।
- किसानों ने कार्यान्वयन को प्रत्यक्ष रूप से देखने के लिए जेएनकेवीवी परिसर के भीतर प्रदर्शन भूखंडों का दौरा किया
- अनुभवी किसानों और शोधकर्ताओं के साथ बातचीत से बहुमूल्य अंतर्दृष्टि और व्यावहारिक सुझाव मिले।
- किसानों ने सहकर्मी शिक्षण और सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देते हुए अपने अनुभव और चुनौतियाँ साझा कीं।

कृषि विज्ञान केन्द्र दमोह मे प्राकृतिक खेती विषय पर
एक दिवसीय जिला स्तरीय कार्यक्रम

संगठन ने दमोह के कृषि विज्ञान केंद्र में प्राकृतिक खेती पर एक जिला स्तरीय कार्यक्रम की मेजबानी की। इस कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को प्राकृतिक कृषि पद्धतियों के लाभों और तकनीकों के बारे में शिक्षित करना है। इसमें केवीके वैज्ञानिकों द्वारा आयोजित सूचनात्मक सत्र, जैविक खेती के तरीकों का व्यावहारिक प्रदर्शन और टिकाऊ कृषि पर चर्चा शामिल थी। कार्यक्रम में 50 किसानों को जैविक खेती की ओर बढ़ने और क्षेत्र में पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए व्यावहारिक अंतर्दृष्टि और संसाधन भी प्रदान किए।

प्राकृतिक खेती की पद्धतियों पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्राकृतिक खेती के विभिन्न पहलुओं के बारे में शिक्षित करना और बड़ी संख्या में किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। खेती के तरीके. प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को खेती में प्राकृतिक तत्वों का सही उपयोग सिखाया गया। किसानों के साथ संपर्क को बढ़ावा देना, और प्राकृतिक खेती के लिए सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना। प्राकृतिक खेती की आवश्यकता और सिद्धांतों पर चर्चा पर ध्यान केंद्रित किया गया। प्राकृतिक खेती की ओर और क्षेत्र में पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना।

जैव-संसाधन केंद्र (बीआरसी) की स्थापना का अवलोकन किया गया जहां मिट्टी के स्वास्थ्य, फसल के लिए फायदेमंद उत्पाद है बताया गया। प्रशिक्षण का समग्र परिणाम सकारात्मक रहा, प्रतिभागियों ने इसके लिए कड़ी सराहना व्यक्त की। खाद्य सुरक्षा और आजीविका में कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को प्राकृतिक कृषि पद्धतियों के लाभों और तकनीकों के बारे में शिक्षित करना है। केवीके के कृषि विशेषज्ञों द्वारा आयोजित सूचनात्मक सत्र, प्राकृतिक खेती के तरीकों का व्यावहारिक प्रदर्शन और टिकाऊ कृषि पर चर्चा की।

ग्रामीण सहभागी आंकलन
Participatory Rural Appraisal (PRA)

ग्रामीण सहभागी आकलन का मतलब हो सकता है कि आप ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के लिए सहयोग करने के लिए एक आकलन योजना या प्रक्रिया की बात कर रहे हैं। यह आमतौर पर गांवों या ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के लिए सरकारी योजनाओं, गैर सरकारी संगठनों या अन्य सामाजिक संगठनों द्वारा किए जाने वाले कामों को आकलन करने के लिए उपयोग होता है। इसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में विकास को बढ़ावा देना होता है ताकि वहां के लोगों को बेहतर जीवन की सुविधाएँ मिल सकें।

कटनी जिले के ढीमरखेड़ा ब्लॉक के 10 गांव में ग्रामीणों के साथ मिलकर PRA की गतिविधि आयोजित की गई कार्यक्रम में 500 से ज्यादा ग्रामीणों की भागीदारी रही है।

सहभागी आकलन (Participatory Rural Appraisal - PRA) एक प्रक्रिया है जो ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के लिए सहयोग करने के लिए अनुभवों, ज्ञान, और स्थानीय समुदाय की भागीदारी को बढ़ावा देती है। इसमें निम्नलिखित सेक्शन्स शामिल होते हैं.
सरकार (Government): सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के लिए योजनाएं बनाती है और नियोजित कार्यक्रमों को चलाती है। सरकारी योजनाएं ग्रामीण समुदायों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
गैर सरकारी संगठन (NGO): गैर सरकारी संगठन ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के लिए काम करते हैं। ये संगठन विभिन्न क्षेत्रों में जैसे कि शिक्षा, स्वास्थ्य, जलवायु परिवर्तन, और ग्रामीण उद्योगों में सहायता प्रदान करते हैं।
स्थानीय समुदाय (Local Community): स्थानीय समुदाय ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। उन्होंने अपने अनुभवों, ज्ञान, और स्थानीय संसाधनों को साझा करके विकास कार्यों में भाग लेते हैं।
इस प्रक्रिया के माध्यम से सरकार, NGO, और स्थानीय समुदाय मिलकर ग्रामीण क्षेत्रों में विकास को प्रोत्साहित करते हैं।

ग्रामीण सहभागी आकलन के उद्देश्य विभिन्न हो सकते हैं, लेकिन यहां कुछ मुख्य उद्देश्य हैं:
सामाजिक और आर्थिक विकास: ग्रामीण सहभागी आकलन का प्रमुख उद्देश्य गांवों और ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक और आर्थिक विकास को बढ़ावा देना होता है। इसके तहत ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य, जलवायु परिवर्तन, कृषि, उद्योग, रोजगार, और अन्य क्षेत्रों में विकास की दिशा में कई योजनाएं चलाई जाती हैं।
सामाजिक समानता की बढ़ावा: ग्रामीण सहभागी आकलन के माध्यम से सामाजिक समानता को बढ़ावा दिया जाता है। इसके तहत ग्रामीण क्षेत्रों में जाति, लिंग, धर्म, वर्ग, और अन्य सामाजिक परंपराओं के खिलाफ लड़ाई और समानता की दिशा में कई पहल की जाती है।
स्वास्थ्य और पर्यावरण की सुरक्षा: ग्रामीण सहभागी आकलन के माध्यम से स्वास्थ्य और पर्यावरण की सुरक्षा को बढ़ावा दिया जाता है। इसके तहत स्वच्छता, पेयजल, स्वास्थ्य सेवाएं, और पर्यावरण संरक्षण के लिए योजनाएं चलाई जाती हैं।

सरकारी विभागों के साथ जिला स्तरीय एडवोकेसी मीटिंग

सरकारी विभागों के साथ जिला स्तरीय एडवोकेसी मीटिंग का आयोजन कटनी जिला मुख्यालय मे बड़वारा और ढ़ीमरखेड़ा ब्लॉक के कार्यकर्ता के साथ मानव जीवन विकास समिति के सचिव निर्भय सिंह के मार्गदर्शन मे प्रोजेक्ट समन्वयक एवं ब्लॉक समन्वयक और जिला प्रशासन की उपस्थिति मे सम्पन्न कराया गया। कार्यक्रम मे 20 कार्यकर्ता एवं 10 जिला प्रशासन अधिकारी की भागीदारी रही है।

समिति का मानना है कि किसानों की स्थायी आजीविका सुनिश्चित हो इसके लिए नये नये प्रयास किये जा रहे है। प्राकृतिक व जैविक खेती के साथ व्यवसाय को बढ़ावा देना।

कार्यक्रम मे नाबार्ड, महिला एवं बाल विकास विभाग, पशुपालन विभाग, उद्योग विभाग, आयुष विभाग, उद्यानिकी विभाग एवं पुलिस विभाग से अधिकारी एवं कर्मचारी ने भाग लेकर समिति कार्यकर्ताओं को सरकार की विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी और हितग्राहियों की आवश्यक मदद पहुंचाने का आश्वासन दिया। बताया गया की योजनाओं की जानकारी लोगों को नही होने से योजना जस की तस रखी रह जाती है इसलिए लोगों को जागरूक होना आवश्यक है। योजनाओं का लाभ आवश्यकता वाले हितग्राही को मिले इसके लिए समिति और विभाग मिलकर काम को बढ़ावा दे रही है। नाबार्ड के सहयोग से समूहों को लोन सुविधा का लाभ दिला कर नव व्यवसाय से जोड़ा जा रहा है। पशुपालन विभाग के सहयोग से मुर्गी पालन और बकरी पालन को बढ़ावा दिया जा रहा है। उद्योग विभाग से जानकारी मिली है की आप उद्योग स्थापित करने हेतु विभाग से सम्पर्क करे आपकी मदद की जायेगी।

वन अधिकार समिति सदस्यों के साथ बैठक

कटनी जिले के ढ़ीमरखेड़ा ब्लॉक के अलग अलग गांव मे वन अधिकार समिति सदस्यों के साथ 22 बैठक किया गया जिसमे 440 समिति सदस्यों की भागीदारी रही है। समिति सदस्य बहुत ही सक्रीयता से अपने अधिकारों को पाने के लिए उत्सुक है। जानकारी के अभाव मे किसान अपने अधिकारों से वंचित है। कटनी जिले का ढ़ीमरखेड़ा ब्लॉक आदिवासी बाहुल्य है यहां पर अधिकांश जनजातियां वनो पर आधारित है। इसके अलावा जंगल की भूमि को कब्जा कर पेड़ पौधे के बिना नुकसान पहुचाये कृषि कार्य मे भी लगे हुये है। कृषि मे देखा जाये तो सिंचाई का साधन न होने से एक फसली फसल का उत्पादन ही कर पा रहे है। किसानों का मानना है कि काबिज भूमि का यदि अधिकार पत्र मिल जाये तो अच्छा होगा ताकि हम किसान बिना दबाव के काबिज भूमि पर स्वतंत्रता से खेती कर सके।

जमीन का अधिकार पत्र किसान के पास नही होने से जंगल विभाग के अधिकारी आये दिन परेशान करते रहते है। इसी के कारण स्थायी रूप से किसान कब्जा होने के बाद भी खेती नही कर पाता है। मानव जीवन विकास समिति अपने कार्यकर्ताओं की मदद से वन अधिकार अधिनियम की जानकारी किसानों को दिया है। वन अधिकार समिति के साथ मिलकर किसानों की समस्याओं पर काम करना है समिति को सक्रीय करना है, बैठक कर वन अधिकार से सम्बंधित समस्याओं का प्रस्ताव पारित विभाग को जानकारी देना और समस्या समाधान कराने की पहल करना। यह भी तय किया गया की जो भी किसान 13 दिसम्बर 2005 के पहले से वन भूमि पर काबिज है उसे साक्ष्य के आधार पर अधिकार पत्र दिलाने की कार्यवाही की जाये। सरकार के एमपी वन एप्प मित्र पोर्टल पर कम्पलीट डाक्युमेंट के साथ आनलाईन आवेदन कराया जायेगा ताकि काबिजों को वन भूमि का अधिकार पत्र मिल सके।

कुपोषण से सुपोषण की अभिनव पहल ....?

सुपोषण अभियान

मानव जीवन विकास समिति विगत कई वर्षो से जिला प्रशासन और महिला एवं बाल विकास विभाग के साथ मिलकर जिले को कुपोषण मुक्त काम कर ही रही है। इसी के साथ ही जिला कलेक्टर महोदय की अपील के अनुसार समिति ने जिले के बड़वारा और ढ़ीमरखेड़ा ब्लाक की 33 पंचायत के 80 गांव की 115 आंगनवाड़ीयों का सर्वे कराकर कुपोषित व अतिकुपोषित 330 बच्चों को गोद लेकर सुपोषित बनाने मिशन चलाया। कार्यक्रम आयोजित कर बच्चों को पोषण किट वितरण किया गया। कार्यक्रम के दौरान कुपोषित बच्चे एवं माताऐं उपस्थित होकर पोषण आहार किट प्राप्त कर खुशी जाहिर की मात्रशक्तियों के चेहरे खुशी से भर गये।

उपस्थित अधिकारी, कर्मचारी, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं समिति कार्यकर्ता ने सभी माताओं से अपील की है कि बच्चों को सुपोषण बनाने मे आपका महत्वपूर्ण सहयोग होगा। पोषण किट के अलावा बच्चों के देखभाल, साफ सफाई और खानपान के समय मे देना होगा ध्यान तभी तो बच्चे सुपोषित होंगे। कुपोषण के कलंक को जड़ से खत्म करना है तो आईये हम सब मिलकर इस मिशन को सफल बनाते है।

ग्रामीण पर्यटन

मानव जीवन विकास समिति द्वारा मध्यप्रदेश ग्रामीण पर्यटन विभाग की मदद से होमस्टे डेवलप करने मध्यप्रदेश के कटनी, उमरिया, डिण्डौरी, दमोह और सीहोर जिले के 7 गांव मे 65 होमस्टे बनाने का काम किया जा रहा है। जिसमे से उमरिया जिले के मरईकला मे 2 और कटनी जिले के कोनिया गांव मे 2 हितग्राही के यहां जल्द ही मकान तैयार होने की स्थिति मे है। मई महीने मे दोनों होमस्टे का उद्‌घाटन भी किया जायेगा। इसके साथ की दूसरे हितग्राही के मकान निर्माण कार्य भी तेजी से चल रहा है।

जैसे जैसे लोगों की रूचि बढ़ती जा रही है वैसे वैसे हितग्राही का चयन कर लेआउट डालने की प्रक्रिया पूर्ण करायी जा रही है। डिण्डौरी जिले के सरवाही गांव मे दमोह जिले के रिचकुड़ी और सिंग्रामपुर गांव मे नये हितग्राहियों के यहां लेआउट मध्यप्रदेश ग्रामीण टूरिज्म विभाग के इंजीनियर के द्वारा डाला गया। भूमि पूजन के बाद जल्द ही नींव का काम शुरू हो जायेगा।

होमस्टे निर्माण कार्य बहुत ही तेजी गति से चल रहा है। कही पर छत का कार्य तो कही पर दिवाल का कार्य चल रहा है। लोगों की रूचि बढ़ रही है काम तेजी से बढ़ रहा है जैसे ही निर्माण कार्य पूरा होगा अतिथियों का आगमन होमस्टे मे शुरू होगा। यह कार्य से गांव मे संभावनाये है की लोगों को अपने घर पर ही रोजगार के अलावा लोगों को होटल और लॉज जैसे सुविधा मुहैया करा सकते है। यहां पर रूकने वाले अतिथियों को लोकल प्राकृतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ लोकल आर्ट का भी आनंद मिलेगा।

सरकारी योजना से लाभान्भित
मुर्गीपालन

कटनी जिले के बड़वारा और ढीमरखेड़ा ब्लॉक के किसानों के साथ समिति स्थायी आजीविका सुनिश्चित करने कार्यक्रम का संचालन कर रही है। समिति का मानना है की कार्यक्षेत्र के सभी हितग्राही का स्थायी आजीविका सुनिश्चित हो। कृषि पर आधारित किसानों के साथ प्राकृतिक व जैविक कृषि को बढ़ावा देने समिति निरंतर प्रयासरत है। भूमिहीन किसानों के साथ पशुपालन व स्वरोजगार स्थापित कराने की ओर अग्रसर है।

पशुपालन विभाग के मुर्गी पालन योजना के तहत बड़वारा ब्लॉक में 19 हितग्राहियों को और ढीमरखेड़ा ब्लॉक में 41 हितग्राहियों को 40 . 40 चूजे प्रदान किये गए। इस योजना से लाभान्वित किसान की स्थाई आजीविका सुनिश्चित होगी।

कुक्कुट पालन (Poultry farming) एक महत्वपूर्ण पशुसंवर्धन क्षेत्र है जिसमें मुर्गीपालन किसान कर रहे है।

कुक्कुट पालन के महत्वपूर्ण बिंदु: प्रजातियों का चयन: अच्छी जाति के मुर्गे और मुर्गियों का चयन किसान को बताया जाता है। आवास और व्यवस्था: उचित आवास और है। व्यवसायिक योजना: अच्छी व्यवसायिक योजना बनाएं जिसमें लाभ, खर्च और आवश्यक संसाधनों का विवरण हो। सुरक्षित व्यवस्था के साथ मुर्गीधानी बनवाया गया है। पोषण और देखभाल: उचित पोषण, पानी और स्वच्छता की देखभाल के तरीके बताये गए। बीमारियों का प्रबंधन: बीमारियों से बचाव के लिए उचित वैक्सीनेशन और दवाओं का प्रयोग करें किसान को व्यवस्थित टाईमलाईन बताया गया।

कृषि विभाग से : स्प्रिंकलर ड्रिप सिंचाई पाईप प्राप्त हुआ

हर खेत को पानी "प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना"

भारत सरकार जल संरक्षण और उसके प्रबंधन को उच्च प्राथमिकता देने के लिए प्रतिबद्ध है। इस आशय के लिए प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना (पीएमकेएसवाई) को हर खेत को पानी सिंचाई के कवरेज को बढ़ाने और पानी के उपयोग की दक्षता में सुधार करने के लिए प्रति बूंद अधिक फसलश पर केंद्रित तरीके से शुरू से अंत तक समाधान के साथ तैयार किया गया है। प्रति बूंद अधिक फसल योजना मुख्य रूप से सूक्ष्म सिंचाई (ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई प्रणाली) के माध्यम से खेत स्तर पर जल उपयोग दक्षता पर केंद्रित है।

समिति के प्रयास से कार्यक्षेत्र के 6 किसानों को स्प्रिंकलर पाईप लाईन "प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना" के तहत लाभ दिलाया गया है।

मानव जीवन विकास समिति किसानों को प्राकृतिक व जैविक खेती करने प्रोत्साहित कर रही है। इसके लिए कम पानी मे अच्छी फसल उत्पादकता हो और गैर कीटनाशी प्रबंधन को बढ़ावा मिले लगातार जागरूक किया जा रहा है। फसलों को समय समय पर पानी दिया जाये और जितना फसलों को पानी की जरूरत हो उतना ही दिया जाये स्प्रिंकलर पाईप से खेत की सिंचाई करें तो बेहतर होगा। इसके लिए किसानों को जागरूक करते हुये कृषि विभाग के पोर्टल पर आनलाईन आवेदन करने कार्यकर्ताओं की मदद से पूरा कराया जा रहा है। पोर्टल पर दर्ज आवेदन लॉटरी सिस्टम से चयनित होकर योजना से लाभ प्राप्त कर रहे है।

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर

शासकीय तिलक स्नातकोत्तर महाविद्यालय कटनी की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई का सात दिवसीय विशेष शिविर, मानव जीवन विकास समिति ग्राम बिजौरी में दिनांक 6 मार्च से 12 मार्च तक प्राचार्य डॉ सुधीर कुमार खरे जी के संरक्षण में रासेयो जिला संगठक अधिकारी डॉ रुकमणी प्रताप जी के मार्गदर्शन में कार्यक्रम अधिकारी डॉ माधुरी गर्ग के निर्देशन में मानव जीवन विकास समिति सचिव निर्भय सिंह के विशेष सहयोग से कार्यक्रम आयोजित किया गया। शिविर में सुबह योग व्यायाम और परियोजना कार्य मे शिविर परिसर की साफ सफाई सोख्ता गड्ढे का निर्माण और रासेयो की शान रैली निकली गई। बौद्धिक सत्र में मानव जीवन विकास समिति सचिव निर्भय सिंह जी के आतिथ्य में वरिष्ठ स्वयंसेवकों ने राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्देश्य और उपलब्धियों के बारे में अवगत कराया। तत्पश्चात देशी खेल सीखे व खेले गए जिसमे कितने भाई कितने लीडर लीडर चाल बदल आदि खेल खेले गए। इसके बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम में सभी स्वयंसेवको ने लोकगीत लोकनृत्य किये गए व सभी ने सांस्कृतिक संध्या का आनंद लिया।

इसके बाद आगामी दिवस में स्वास्थ्य जन स्वच्छता एवं व्यक्तिगत स्वास्थ्य के सम्बन्ध में संवाद ग्रुप चर्चा एवं प्रदर्शन के द्वारा जानकारी से सभी शिविरार्थी रूबरू हुए। इसी दौरान प्राचार्य तिलक कॉलेज जिला संयोजक एन एस एस का विशेष मार्गदर्शन शिविरार्थी को मिला। इसके बाद जन जागरूकता रैली का किया गया आयोजन मझगवां गांव में डॉ माधुरी गर्ग के नेतृत्व में निकाली गई इस रैली का मुख्य उद्देश्य जन स्वच्छता मतदाता जागरूकता नशा उन्मूलन बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जल बचाओ कल बचाओ नारी सुरक्षा पर्यावरण संरक्षण रहा है। स्वयंसेवको ने मझगवां यात्री प्रतीक्षालय की साफ सफाई की व पॉलीथीन मुक्त भारत का संदेश दिया साथ ही नुक्कड़ नाटक के माध्यम से मतदाता जागरूकता की जानकारी दी गई।

शासकीय तिलक महाविद्यालय कटनी की एन एस एस इकाई की शिविर का समापन हुआ शिविर के समापन सत्र में महाविद्यालय के प्राचार्य जी की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय समन्वयक श्री शोभाराम मेहरा जिला संगठक डॉ आर पी सिंह मानव जीवन विकास समिति के संचालक श्री निर्भय सिंह जी समापन सत्र में उपस्थित हुए सर्वप्रथम मां सरस्वती के चरणों में नमन करते हुए स्वामी विवेकानंद जी की प्रतिमा के समक्ष माल्यार्पण कार्यक्रम से समापन सत्र का शुभारंभ किया गया कार्यक्रम प्रभारी डॉ माधुरी गर्ग ने पुष्पगुच्छ स्मृति चिन्ह नारियल के माध्यम से मुख्य अतिथि के रूप में विराजमान श्री मेहरा का सम्मान किया इसी क्रम में श्री अतुल कुमार ने डॉ आर पी सिंह का एवं डॉक्टर अजय कुमार ठाकुर ने श्री निर्भय सिंह का सम्मान किया कुमारी कनक सोनी ने कार्यक्रम प्रभारी डॉक्टर माधुरी गर्ग का पुष्पगुच्छ स्मृति चिन्ह के द्वारा सम्मान किया। डॉ माधुरी गर्ग ने शिविर का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया और विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के बारे में बताया अपने स्वागत में उन्होंने कहा कि श्री मेहरा जी का आगमन एन एस एस को ऊंचाइयों तक ले जाने में विशेष भूमिका अदा करेगा। डॉक्टर मेहरा जी ने कहा कि मनुष्य को मनुष्य बनाने की भूमिका का निर्माण करता है हम समाज से जुड़े हुए हैं समाज में रहकर के समाज की विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में भाग लेकर के एक दूसरे की समस्याओं का समाधान करना ही सीखाता है। रुक्मणी प्रताप सिंह ने एनएसएस के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। निर्भय सिंह जी ने कहा कि हमें राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई स्वयं से जोड़ता है स्वयं के प्रति प्रेम भाव पैदा करता है और तभी हम स्वस्थ जीवन का निर्माण कर सकते हैं हमें समाज के समस्त वर्ग के प्रति विशेष कर लघु मानव के प्रति प्रेम भाव रखना चाहिए तभी जीवन की सार्थकता है। सांस्कृतिक कार्यक्रम में कुमारी गायत्री बर्मन ने हरियाणवी नृत्य प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि महोदय के द्वारा स्वयंसेवकों को प्रमाण पत्र प्रदान किया गया और अंत में डॉ माधुरी गर्ग ने आभार व्यक्त किया।

न्यूज कवरेज

जैव संसाधन केन्द्र और बीज बैंक केन्द्र की स्थापना

जैव संसाधन केन्द्र और बीज बैंक केन्द्र की स्थापना से जिले के 80 गांव से 8000 किसानों को मिलेगा लाभ

कटनी , अग्निबाण। मानव जीवन विकास समिति द्वारा जिले के बड़वारा और ढ़ीमरखेड़ा ब्लॉक के 80 गांव मे 8000 किसानों के साथ आजीविका आधारित परियोजना का संचालन किया जा रहा है। इसी परिपेक्ष्य मे किसानों की सुविधा को ध्यान मे रखते हुये जैव संसाधन केन्द्र और बीज बैंक केन्द्र की स्थापना कर किसानों को आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने की पहल की जा रही है। बड़वारा ब्लॉक के 4 गांव महगवां, भजिया, भादावर और पठरा मे जैव संसाधन केन्द्र और 7 गांव भदौरा नं.01, बनहरा, बरगवां नं.02, गोपालपुर, बिलायतखुर्द, नन्हवारा और बरगवां नं.01; नैगवा मे बीज बैंक केन्द्र की स्थापना की गई है।

ढ़ीमरखेड़ा ब्लॉक के 5 गांव खंदवारा, दैगवा, सलैया, पिपरिया चांद, और जामुनचुआ मे जैव संसाधन केन्द्र और 10 गांव खंदवारा, दैगवा, भलवारा, सलैया, बांध, दादर सिहुड़ी, सरई, कुदरा, सर्रा और पहरूआ मे बीज बैंक केन्द्र की स्थापना की गई है। जैव संसाधन केन्द्र और बीज बैंक केन्द्र का संचालन गांव की स्व.सहायता समूह की महिला एवं ग्राम विकास समिति सदस्यों द्वारा किया जाना तय किया गया है। गांव गांव मे संचालित समूह की महिलाओं द्वारा प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने जैविक दवाईयां और जैविक खाद का निर्माण कर स्थापित केन्द्र के माध्यम से उचित मूल्य पर किसानों को उपलब्ध कराया जायेगा। इस पूरी प्रक्रिया से समूह व किसान दोनो की आर्थिक स्थिति मे बदलाव आयेगा।

बीज बैंक केन्द्र मे विलुप्त होने की कगार मे जो प्रजाती है जैसे कोदो, कुटकी, रागी उसे भी संगृहीत करके रखा है आगामी वर्ष मे फसल उत्पादन के समय किसानों को आसानी से उपलब्ध कराया जागो। जैव संसाधन केन्द्र मे जैव कीटनासी दवाईया, फूलवर्द्धक दवाईया समूह के माध्यम से तैयार कर केन्द्र के माध्यम से किसानों को उपलब्ध कराया जायेगा।

बीज बैंक का हुआ उद्घाटन

सिंग्रामपुर। मानव जीवन विकास समिति के तत्वाधान में जैविक और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए बीज बैंक केंद्र की स्थापना जनपद जबेरा के ग्राम पंचायत पिपरिया, सहसना में जनपद सदस्य जय सिंह प्रतिनिधि ने बैंक मे रिबन काटकर उद्घाटन किया। काली स्व सहायता समूह की अध्यक्ष कोशध्यक्ष ने बात रखते हुए कहा समूह की मंशा अनुसार बीज बैंक का संचालन किया जाएगा। बीज बैंक संचालक स्वयं सहायता समूह की महिलाएं एवं ग्राम विकास समिति द्वारा किया जाना तय किया गया है। बीज बैंक के केंद्र में विलुप्त होने कि कगार में जो प्रजाति हैं जैसे कोदो कुटकी बाजरा रागी उसको संग्रहित करके रखा जाएगा। आगामी वर्ष में फसल उत्पादन के समय किसानों को आसानी से उपलब्ध कराया जा सके। पंचायत कार्यकर्ता अर्चना गोंड, कैलाश टेकाम कलूमर अनिल धुर्वे ने भी बीज बैंक के बारे में जानकारी दी। उद्घाटन में गांव के ग्राम विकास समिति के सदस्य एवं स्वयं सहायता समूह की महिलाएं की उपस्थिति रही। सभी ने ग्राम वासियों ने बीज बैंक बनने से सभी ग्राम वासियों ने सराहना की।

अनुसार मतदाता जागरूकता गतिविधियां

बीज बैंक का शुभारंभ करते जनप्रतिनिधि। ● नईदुनिया

जैव संसाधन केंद्र और बीज बैंकों से जिले के 8000 किसानों को मिलेगा लाभ

जैविक खेती को बढ़ावा देने मानव जीवन विकास समिति ने की केंद्रों की स्थापना

कटनी (नईदुनिया न्यूज)। मानव जीवन विकास समिति द्वारा कटनी जिले के बड़वारा और ढीमरखेड़ा ब्लाक के 80 गांव मे 8000 किसानों के साथ आजीविका आधारित परियोजना का संचालन किया जा रहा है। इसी परिपेक्ष्य में किसानों की सुविधा को ध्यान में रखते हुये जैव संसाधन केन्द्र और बीज बैंक केन्द्र की स्थापना कर किसानों को आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने की पहल की जा रही है। बड़वारा ब्लाक के 4 गांव (महगवां, भजिया, भादावर और पठरा) में जैव संसाधन केन्द्र और 7 गांव (भदौरा नं.01, बनहरा, बरगवां नं.02, गोपालपुर, बिलायतखुर्द, नन्हवारा और बरगवां नं.01, नैगवां) में बीज बैंक केन्द्र की स्थापना की गई है। ढीमरखेड़ा ब्लाक के 5 गांव (खंदवारा, दैगवा, सलैया, पिपरिया चांद और जामुनचुआ) में जैव संसाधन केन्द्र और 10 गांव (खंदवारा, दैगवां, भलवारा, सलैया, बांध, दादर सिहुड़ी, सरई, कुदरा, सर्रा और पहरूआ) में बीज बैंक केन्द्र की स्थापना की गई है।

जैव संसाधन केन्द्र और बीज बैंक केन्द्र का संचालन गांव की स्व-सहायता समूह की महिला एवं ग्राम विकास समिति सदस्यों द्वारा किया जाना तय किया गया है। गांव-गांव में संचालित समूह की महिलाओं द्वारा प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने जैविक दवाइयां और जैविक खाद का निर्माण कर स्थापित केन्द्र के माध्यम से उचित मूल्य पर किसानों को उपलब्ध कराया जायेगा। इस पूरी प्रक्रिया से समूह व किसान दोनों की आर्थिक स्थिति मे बदलाव आयेगा।

बीज बैंक केन्द्र मे विलुप्त होने की कगार में जो प्रजाति है जैसे कोदो, कुटकी, रागी उसे भी संग्रहीत करके रखा है। आगामी वर्ष में फसल उत्पादन के समय किसानों को आसानी से उपलब्ध कराया जाएगा। जैव संसाधन केन्द्र में जैव कीटनाशक दवाइयां, फूलवर्द्धक दवाइयां समूह के माध्यम से तैयार कर केन्द्र के माध्यम से किसानों को उपलब्ध कराया जायेगा।

किसान कार्यशाला संपन्न

तेंदूखेड़ा। ब्लॉक के अंतर्गत ग्राम बमनोदा के खदरीहार में परंपरागत प्राकृतिक जैविक खेती पर एक दिवसीय किसान कार्यशाला आयोजित की गई। जिसमें उपस्थित किसानों ने परंपरागत खेती पर विचार रखते हुए कहा कि पहले मोटे अनाज जैसे कोदों, कुटकी, रागी, बाजरा, ज्वार, मक्का आदि की खेती होती थी। सब्जी के साथ ही अन्य खाद्य मसाले घर के ही होते थे, जिनका उपयोग भोजन में किया जाता था। साथ ही हर किसान के पास मवेशी होते थे, जिससे दूध, दही, घी की कमी नहीं होती थी। लेकिन अब ऐसा नहीं है। जिसका असर भी मानव जीवन पर पड़ रहा है। देशी इलाज, पुराने अनाज बीजों का उत्पादन लुप्त होते जा रहे हैं, जिन्हें अभी से वापस लाना होगा, तभी मानव जीवन संतुलन आने वाले समय में संभव होगा। किसान नंदलाल ने बताया कि उन्होंने हाईब्रिड किस्म गेहूं बोनी की थी, जिसमें जैविक खाद का उपयोग किया था। जिससे अच्छा फायदा हुआ है। यदि पूर्ण रूप से जैविक खेती की जाए तो बोनी के बाद 3 पानी से लगभग एक एकड़ में अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है। इस दौरान घनश्याम, राजेश कुमार पंवार, मानसींग यादव सहित अन्य ने भी अपनी बात रखी।

://hindi.news18.com/.../damoh-mp-seed-banks-opened...

के गांव-गांव में खुले अनोखे बैंक... इनकी चाबी महिलाओं के हाथ में

मुहिम इतनी कारगर साबित हुई कि अब प्रदेश के हर हिस्से में ग्रामीणों ने बीज बैंक खोलकर विलुप्त हो रहे मोटे अनाज की किस्मों को जमा करना शुरू कर दिया है, जिसकी एक झलक दमोह में भी देखने को मिली

समदई में बीज मेले का आयोजन कर जैविक खेती का बताया महत्व

भास्कर न्यूज़। तेंदूखेड़ा

जनपद पंचायत तेंदूखेड़ा के तहत आने वाली ग्राम पंचायत समदई में मानव जीवन विकास समिति के सहयोग से बीज मेले का आयोजन किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य जैविक और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना था। बीज बैंक केंद्रों की स्थापना ब्लॉक के विभिन्न गांवों में की गई है। जिनका संचालन स्व-सहायता समूह की महिलाओं और ग्राम विकास समितियों की मंशानुसार किया जा रहा है। समिति सचिव निर्भय सिंह ने बताया कि बीज बैंक संचालक स्व-सहायता समूह की महिलाएं एवं ग्राम विकास समितियों द्वारा बिलुप्त होने की कगार में जो प्रजाति है, जैसे कोदो, ज्वार, समा, बाजरा, कुटकी, रागी, उसको संग्रहित कर के रखा जा रहा है। ये बीज फसल उत्पादन के समय किसानों को आसानी से उपलब्ध कराया जाएगा। परियोजना समंवयक राधिका तिवारी ने किसानों के द्वारा चयन किया गया अनाज एवं सब्जियों के परम्परागत बीजों के संबंध में जानकारी दी। राजीव गुप्ता ने कहा कि अब समय आ गया है कि जल, जंगल, जमीन, बीज और जानवर को संरक्षित कर किसानो को आगे बढ़ने की जरूरत है। पेड़ों और पौधों की संख्या घटती जा रही है, जबकि मानव जीवन के लिए ऑक्सीजन बेहद जरूरी है। प्राकृतिक खेती करने की जरूरत है क्योंकि यहां रासायनिक खाद एवं दवाईयों का अधिक उपयोग नहीं किया गया है, जहां रासायनिक खाद और दवाईयों का उपयोग अधिक मात्रा में किया गया है, वहां की भूमि रेतेली और ठोस व बंजर हो रही है। खेतों में केंचुआ नहीं है, आनाज के लिए पौष्टिक तत्व समाप्त हो रहे हैं। समिति ब्लॉक समन्वयक घनश्याम प्रसाद रायकवार ने कहा कि शून्य बजट की खेती के लिए परम्परागत हर बखर बैल का ही उपयोग करने से ही लाभ कमाया जा सकता है। खेती में जैविक खाद, जैविक दवाईयों का उपयोग करना चाहिए। आसपास जो पेड़-पौधे हैं उनका संरक्षण जरूरी है। कार्यक्रम में 16 ग्रामों के 62 किसानों और कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

परंपरागत प्राकृतिक खेती पर कार्यशाला हुई

भास्कर संवाददाता | तेंदूखेड़ा

कृषि विज्ञान केंद्र और मानव जीवन विकास समिति के सहयोग से ग्राम बमनोदा के खदरीहार में परंपरागत प्राकृतिक खेती पर एक दिवसीय कार्यशाला हुई। जिसमें किसानों ने बताया पहले के समय में मोटे अनाज कोदों, कुटकी, रागी, बाजरा, ज्वार, मक्का आदि की जानकारी दी।

बताया गया यदि पूर्ण रूप से जैविक खेती की जाएं तो बोनी के बाद 3 पानी से लगभग एक एकड़ में 20 से ऊपर का उत्पादन लिया जा सकता है। संस्था ब्लांक समन्वयक घनश्याम ने बताया इसी तरह स्वयं के उत्पादन से पापड़ बनाना, पशुपालन के दूध से पनीर बनाना, दाल बनाना, मिर्च उत्पादन से एवं धनियां उत्पादन से पाउडर तैयार करना जैसे खाद्य सामग्री पैकिंग तक के फायदे पर फोकस रखा गया। बैठक में मौसम वैज्ञानिक राजेश कुमार मौजूद रहे। कार्यकर्ता मानसींग यादव ने बताया पर्यावरण संतुलन को लेकर चर्चा की। इस दौरान नंदलाल गौड़, हाकम सींग, रमेश सींग, जगदीश, हल्लकेभाई, सुरेश, प्रीतम सिंह गौड़, सूरतसींग, संतोष, हीरासींग, राजेश, लट्टू, कुंवर मन, विशाल, बाली सिंह, टेक्करन, राजकुमार के अलावा किसानों की उपस्थिति रही।

राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई का सात दिवसीय शिविर आयोजित

जागरण, कटनी। शासकीय तिलक स्नातकोत्तर महाविद्यालय कटनी की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई का सात दिवसीय विशेष शिविरए मानव जीवन विकास समिति ग्राम बिजौरी में 6 मार्च से 12 मार्च तक प्राचार्य डॉ सुधीर कुमार खरे के संरक्षण में रासेयो जिला संगठक अधिकारी डॉ रुकमणी प्रताप के मार्गदर्शन में कार्यक्रम अधिकारी डॉ माधुरी गर्ग के निर्देशन में संचालित हो रहा है। मानव जीवन विकास समिति सचिव निर्भय सिंह का विशेष सहयोग प्राप्त है।

शिविर के द्वितीय दिवस में सुबह योगए व्यायाम, परियोजना कार्य मे शिविर परिसर की साफ सफाई, सोख्ता गड्ढे का निर्माण और रासेयो की शान रैली, पोस्ट का निर्माण किया गया। बौद्धिक सत्र में मानव जीवन विकास समिति सचिव निर्भय सिंह के आतिथ्य में वरिष्ठ स्वयंसेवकों ने राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्देश्य और उपलब्धियों के बारे में अवगत कराया। तत्पश्चात देशी खेल सीखे व खेले गए जिसमे कितने भाई कितने लीडर, लीडर चाल बदल आदि खेल खेले गए। इसके बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम में सभी स्वयंसेवको ने लोकगीत, मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ के लोकनृत्य किये गए व सभी ने सांस्कृतिक संध्या का आनंद लिया।

जबेरा जनपद सदस्य प्रतिनिधि ने कराई बीज बैंक की शुरुआत

शुरूआत कराने के दौरान मौजूद लोग। • नईदुनिया

सिंग्रामपुर(नईदुनिया न्यूज)। मानव जीवन विकास समिति के तत्वाधान में जैविक और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिये बीज बैंक केंद्र की स्थापना जनपद जबेरा के ग्राम पंचायत पिपरिया, सहसना में जनपद सदस्य जयसिंह प्रतिनिधि ने बैंक मे रिबन काटकर उद्घाटन किया।

काली स्व सहायता समूह अध्यक्ष कोषाध्यक्ष ने कहा कि समूह मंशा अनुसार बीज बैंक का संचालन किया जाएगा। बीज बैंक संचालक स्वयं सहायता समूह की महिलायें एवं ग्राम विकास समिति द्वारा किया जाना तय किया गया है। बीज बैंक के केंद्र में विलुप्त होने कि कगार में जो प्रजाति है, जैसे कोदो, कुटकी, बाजरा, रागी उसको संग्रहित करके रखा जाएगा, आगामी वर्ष में फसल उत्पादन के समय किसानों को आसानी से उपलब्ध कराया जा सके। पंचायत कार्यकर्ता अर्चना गोंड, कैलाश टेकाम, अनिल धुर्वे ने भी बीज बैंक के बारे में जानकारी दी। इस दौरान ग्राम विकास समिति सदस्य एवं स्वयं सहायता समूह की महिलाओं की उपस्थिति रही।

जैव संसाधन और बीज बैंक केन्द्र की स्थापना

80 गांव के 8 हजार किसानों को मिलेगा लाभ

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कटनी

जैविक व प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने मानव जीवन विकास समिति द्वारा जैव संसाधन केन्द्र और बीज बैंक केन्द्र की स्थापना की गई। जैव संसाधन केन्द्र और बीज बैंक केन्द्र की स्थापना से जिले के 80 गांव से 8000 किसानों को मिलेगा लाभ। मानव जीवन विकास समिति द्वारा कटनी जिले के बड़वारा और ढीमरखेड़ा ब्लॉक के 80 गांव मे 8000 किसानों के साथ आजीविका आधारित परियोजना का संचालन किया जा रहा है।

इसी परिपेक्ष्य मे किसानों की सुविधा को ध्यान मे रखते हुये जैव संसाधन केन्द्र और बीज बैंक केन्द्र की स्थापना कर किसानों को आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने की पहल की जा रही है।

बड़वारा ब्लॉक के 4 गांव महगवां, भजिया, भादावर और पठरा मे जैव संसाधन केन्द्र और 7 गांव भदौरा नं.01, बनहरा, बरगवां नं.02, गोपालपुर, बिलायतखुर्द, नन्हवारा और बरगवां नं.01 ; नैगवा मे बीज बैंक केन्द्र की स्थापना की गई है।

ढीमरखेड़ा ब्लॉक के 5 गांव खंदवारा, दैगवा, सलैया, पिपरिया चांद, और जामुनघुआ मे जैव संसाधन केन्द्र और 10 गांव खंदवारा, दैगवा, भलवारा, सलैया, बांध, दादर सिहुड़ी, सर्रा, कुदरा, सर्रा और पहरूआ मे बीज बैंक केन्द्र की स्थापना की गई है।

जैव संसाधन केन्द्र और बीज बैंक केन्द्र का संचालन गांव की स्व.सहायता समूह की महिला एवं ग्राम विकास समिति सदस्यों द्वारा किया जाना तय किया गया है। गांव गांव मे संचालित समूह की महिलाओं द्वारा प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने जैविक दवाईयां और जैविक खाद का निर्माण कर स्थापित केन्द्र के माध्यम से उचित मूल्य पर किसानों को उपलब्ध कराया जायेगा। इस पूरी प्रक्रिया से समूह व किसान दोनो की आर्थिक स्थिति मे बदलाव आयेगा।

बीज बैंक केन्द्र मे विलुप्त होने की कगार मे जो प्रजाती है जैसे कोदो, कुटकी, रागी उसे भी संगृहीत करके रखा है आगामी वर्ष मे फसल उत्पादन के समय किसानों को आसानी से उपलब्ध कराया जागो।

जैव संसाधन केन्द्र मे जैव कीटनासी दवाईया, फूलवर्द्धक दवाईया समूह के माध्यम से तैयार कर केन्द्र के माध्यम से किसानों को उपलब्ध कराया जायेगा।

जबलपुर, गुरुवार, 14 मार्च, 2024

मानव जीवन विकास समिति द्वारा की गई पहल, 80 गांवों के लोगों को मिलेगा लाभ

जैविक व प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने जैव संसाधन केंद्र और बीज बैंक शुरू

पत्रिका सिटी रिपोर्टर
patrika.com

कटनी. मानव जीवन विकास समिति के द्वारा क्षेत्र व जिले में जैविक खेती सहित प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए जैव संसाधन केन्द्र और बीज बैंक केन्द्र की स्थापना की गई हैं। इस सुविधा के शुरू होने से जिले के 80 गांव से 8000 किसानों को मिलेगा लाभ। मानव जीवन विकास समिति द्वारा बड़वारा और ढीमरखेड़ा ब्लॉक के किसानों के साथ आजीविका आधारित परियोजना का संचालन किया जा रहा है। किसानों को आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने की पहल की जा रही है।

बड़वारा ब्लॉक के 4 गांव महगवां, भजिया, भादावर और पठरा मे जैव संसाधन केन्द्र और 7 गांव भदौरा नंबर एक, बनहरा, बरगवां नंबर दो, गोपालपुर, बिलायतखुर्द, नन्हवारा और बरगवां नंबर एक, नैगवां में बीज बैंक केंद्र की स्थापना की गई है। ढीमरखेड़ा ब्लॉक के 5 गांव खंदवारा, दैगवा, सलैया, पिपरिया चांद, और जामुनचुआ मे जैव संसाधन केन्द्र और 10 गांव खंदवारा, दैगवा, भलवारा, सलैया, बांध, दादर सिहुड़ी, सरई, कुदरा, सर्रा और पहरूआ मे बीज बैंक केंद्र की स्थापना की गई है।

महिला समूह चलाएंगे केंद्र- जैव संसाधन केन्द्र और बीज बैंक केन्द्र का संचालन गांव की स्व.सहायता समूह की महिला एवं ग्राम विकास समिति सदस्यों द्वारा किया जाना तय किया गया है। गांव-गांव मे संचालित समूह की महिलाओं द्वारा प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने जैविक दवाइयां और जैविक खाद का निर्माण कर स्थापित केन्द्र के माध्यम से किसानों को उपलब्ध कराया जाएगा। बीज बैंक केंद्र में विलुप्त होने की कगार में जो प्रजाति हैं जैसे कोदो, कुटकी, रागी उसे भी संग्रकहत करके रखा है। आगामी वर्ष मे फसल उत्पादन के समय किसानों को आसानी से उपलब्ध कराया जाएगा। जैव संसाधन केंद्र में जैव कीटनाशी दवाइयां, फूलवर्धक दवाइयां समूह के माध्यम से तैयार कर किसानों को उपलब्ध कराया जाएगा।

From labourers to decision-makers

Inspiring tales of 3 women sarpanchs

Having experienced poverty, they know what the poor need, are working for their welfare

SMITA
city.bhopal@fpj.co.in

Three women sarpanchs in Madhya Pradesh began their life as manual labourers but are now the decision-makers in their villages. They are barely educated but know the importance of education. And having experienced poverty themselves, they have deep empathy for the poor and know their needs well. They have transformed their panchayats by fulfilling the basic needs of the people - good roads, adequate drinking water, schools, toilets and employment. Here are the profiles of the doughty women who are trying to make life better for their people.

'Pahle majdoori karte the, ab dete hain'

37-year-old Ram Bai Nayak is the first and the youngest women Sarpanch of village panchayat Tanda. Before becoming Sarpanch, she was a farm labourer. She has hardly studied up to grade five. She ensured the construction of two water tanks facilitating individual drinking water supply to each house. She arranged free education for masons children. She was also instrumental in ensuring that over 48 families have access to toilets. She plans to upgrade the middle school to a high school. "I had never thought that a woman labourer like me can become the decision-maker for my village. Pahle majdoori karte the, ab gaon ke logon ko majdoori de rahe hain MGNREGA ke anargart," she says.

Taps in 800 homes

Kusum Rani (32) is the first SC and the second women Sarpanch of Bamnaud village panchayat in the Damoh district.

Kusum, who was a construction worker, is happy that she could solve the perennial drinking water crisis in her panchayat. "I persuaded the villagers to get taps installed at their homes and now 800 homes in my area get piped water supply under the Jal Jeevan Mission." And concrete-cement roads have replaced the muddy streets in the five hamlets.

'Know what poverty means'

Kala Bai (62), the sarpanch of Aredi village Panchayat in the Bhopal district is illiterate. But that didn't stop her from appreciating the need for a higher secondary school in her village. "After clearing grade 5, our children had to cross a nullah and walk to another village to attend school. So I tried and succeeded in getting a higher secondary school opened here," said the Sarpanch, who used to break stones to earn a living. Over the past two years, she has got 500 ration, 600 Ayushman and 50 Karmakar cards made for the residents. Her village now boasts of CC roads. "Ab to ghar-ghar tak auto aa jataa hai," she says. Kala Baai's priorities are clear. "I have experienced poverty. And so I want to help the poor," she says.

THE FREE PRESS JOURNAL Thu, 07 March 2024
https://epaper.freepressjournal.in/c/74695985

धन्यवाद!

मानव जीवन विकास समिति

पता : ग्राम बिजौरी, पोस्ट मझगवां (बरही रोड), जिला कटनी म.प्र. पिन कोडः 483501
मो.नं. 9425157561
Email : mjvskatni@gmail.com
website : www.mjvs.org ,
Blogger - https://mjvskatni.blogspot.com/
Twitter - https://twitter.com/mjvs_katni_mp
Facebook - https://www.facebook.com/ngomjvskatni/
Instagram - https://www.instagram.com/manavjeevanvikassamiti/
Youtube- https://www.youtube.com/channel/UCiEnoE5h_oePCKrsea7rLWQ
Linkedin – https://www.linkedin.com/in/manav-jeevan-vikas-samiti-0b7559266